अध्याय 15

अलंकार

अलंकार के अर्थ होला 'गहना'। जइसे सोना-चानी के गहना से देह के सुनरता बढ़ जाले, ओही तरह से जवना उपकरण से काव्य के शोभा-सुन्दरता बढ़ेलें, ओकरा के अलंकार कहल जाला। 'अलंकार' शब्द के व्युत्पति मूलक अर्थ बतावत कहल गइल बा कि जे अलंकृत मतलब शोभा बढ़ावे ऊ अलंकार ह।

काव्य के सुन्दरता कबो शब्द पर निर्भर होला त कबो अर्थ पर आ कबो-कबो ई सुन्दरता शब्द आ अर्थ दूनों पर टिकल होला। काव्य के शोभा बढ़ावे वाला अलंकारन के एह तीनों स्थिति के आधार पर अलंकार के तीन गो प्रकार बतावल गइल बा-

1. **शब्दालंकार**- जहँवा शब्दगत अलंकार होखे।
2. **अर्थालंकार**- जहँवा अर्थगत अलंकार होखे।
3. **शब्दार्थालंकार**-जहाँ वा शब्दार्थगत अलंकार होखे। शब्दार्थालंकार के उभयालंकार भी कहल जाला।

अब इहाँ काव्य के शब्दालंकार, अर्थालंकार आ शब्दार्थालंकार के सामान्य ज्ञान खातिर इहवाँ के कुछ अलंकारन के लक्षण आ ओकर उदाहरण प्रस्तुत कइल जाईं जइसे शब्दालंकार के रूप में अनुप्रास (छेकानुप्रास,

वृत्यानुप्रास आ लाटानुप्रास), श्लेष आ वक्रोक्ति, अर्थालंकार के रूप में उपमा, रूपक, दृष्टान्त, संदेह, विभावना, आ अतिशयोक्ति अलंकार के लक्षण आ उदाहरण दिहल जा रहल बा।

शब्दालंकार

अनुप्रास

जहाँ व्यंजन के समता होखे, भले उनकर स्वर मिले चाहे ना, उहाँ अनुप्रास अलंकार होला। अनुप्रास में तीन खण्ड बा-अनु-प्र+आस। 'अनु' के मतलब होला आवृत्ति, 'प्र' के प्रकर्ष आ 'आस' के अर्थ होई राखल चाहे विन्यास कइल। मिला-जुला के एकर अर्थ भइल जहाँ पर वर्ण बार-बार आवृत्ति के साथ जवरे-जवरे राखल जाय। एकर कई गो भेद होला-

छेकानुप्रास-जब अनेक व्यंजन के एक बेर स्वरूप आ क्रम से आवृत्ति होखे, त ओकरा के छेकानुप्रास कहल जाला। श्री विश्वनाथ कविराज के कहनाम बा-

''छेको व्यंजनसंघस्य सकृत साम्यमनेकधा''।

-साहित्य दर्पण (दशम परिच्छेद, नवम् संस्करण)

उदाहरण - सुरपुर नरपुर नाग नगरिया

रंग विरंगी बाग बजरिया

अधरम धरम, करम कुकरम के

-रघुनाथशरण शुक्ल **'कुवोध'** (के, पृ॰ 8)

इहाँ 'सुरपुर नरपुर' में र प र के, 'नाग नगरिया' में न आ ग के, 'रंग बिरंगी' में र आ ग के, 'बाग बजरिया' में ब के, 'अधरम धरम' में ध रम के, आ 'करम कुकरम' में क र म के एक-एक बेर आवृत्ति से छेकानुप्रास होई।

वृत्यानुप्रास – अगर जे एक व्यंजन के एक बेर चाहे अनेक बेर, अनेक व्यंजन के एक बेर चाहे अनेक बेर स्वरूप से भा अनेक व्यंजन के स्वरूप आ क्रम से आवृत्ति होखेला, त वृत्यानुप्रास कहल जाला। विश्वनाथ कविराज के कथन बा–

"अनेकस्येकधा साम्यमसकृतद्वापयनेकधा।

एकस्य सकृदप्येव कृत्यानुप्रास उच्यते ॥41॥

–साहित्य दर्पण (द०प०), पृ० 275

उदाहरण– दन दनात, दन-दनदनात दन-दन-दन-दन

फन फनात, फन-फनफनात फन-फन-फन-फन

–अविनाशचन्द्र 'विद्यार्थी' (सेवकायन) पृ० 51

इहाँ पहिलकी पाँति में द आ न के आउर दोसरका पाँति में फ आ न के कतना बेर स्वरूप आ क्रम से आवृत्ति भइल बाटे।

अइसहीं– **बगिया बेयरिया बहारे बसंत चाहे आवे ना आवे**

केसिया किरनिया सँवारे बसंत चाहे आवे ना आवे

कुमार विमल (किरिन छुअत दरपन) पृ० 17

इहाँ पहिलकी पाँति में शब्द के शुरू में व्यंजन के कई बेर आवृत्ति भइला से वृत्यानुप्रास के उदाहरण बा।

लाटानुप्रास–जहाँ शब्द आ अर्थ के आवृत्ति में अभिप्राय मात्र के भिन्नता होखे, उहाँ लाटानुप्रास होला। विश्वनाथ कविराज के अनुसार–

"शब्दार्थयो पौनरूक्त्यं भेदे तात्पर्यमात्रतः। लाटानुप्रास इत्युक्तो।"

–**साहित्य दर्पण** (द०प०), पृ० 277

उदाहरण– **लोहन से लोह कटई, काँटन से काँट कढ़ई**
पुतरी कऽचोट खाई घायल पुतरिया।
बेंटन जब काठ क टँगारिन में लागि जाले
काटि देले काठन क मोट मोट डरिया।
जतिया कऽ बैरी बनि जाति बड़ि दुखदेई,
कुकुर के देखतई भूँकेली कुकुरिया।
गौरन की ओर से लड़ल डुमराँव राज
हाइ भोजपुरिया कि खाई भोजपुरिया।

–**चन्द्रशेखर मिश्र** (कुअँर सिंह, पृ० 228)

इहाँ लोहा, काँट, काठ, जाति, कुकुर आ भोजपुरिया शब्द के आ एकनी के अर्थ के एक रहलो पर तात्पर्य भेद बा। एगो लोहा काटे वाला, दोसर कटाये वाला, एक काँट गड़े वाला, एक गड़ल काँट काढ़ै वाला, एगो काठ काटे वाला त दोसर कटाये वाला, एक जाति दुखी त दोसर क दुख देवे वाला, एक कुकुर भूँके वाला त दोसर देखल जाए वाला आ एक

भोजपुरिया धोखा देवे वाला त दोसर धोखा खाये वाला बाटे। एही से इहाँ लाटानुप्रास अलंकार बा।

श्लेष

शिलष्ट शब्दन से अनेक अर्थ के कथन के श्लेष अलंकार कहल जाला। जहवाँ एके शब्द से अनेक अर्थ निकले, उहाँ श्लेष अलंकार होला। विश्वनाथ कविराज के परिभाषा बाटे–

''शिलष्टैः पदैरनेकार्याभिधाने' श्लेष इष्यते।
शब्दै : स्वभावदेकार्थैः श्लेषोऽनेकार्थवाचनम्।11''

–**साहित्यदर्पण** (द०प०), पृ० 282

श्लेष के दू भेद–'अभंगश्लेष' आ 'सभंगशेलेष' होला। जहाँ पद के बिना भंगले अन्यार्थ के प्रतीत हो जाए, उहाँ अभंगश्लेष होई।

जहाँ एक से अधिक अर्थ के प्रतीति शिलष्ट शब्दन के अवयव के भंग करके कइल जाए, उहाँ सभंगश्लेष होई।

उदाहरण–**आज बरसाइत रगरवा मचावे जिन नहके झगरवा उठाव**
अपनो ही बरवा में पूजो बलबीरवा पीपरवा पूजन तू हीं जाब।

–**रामकृष्ण वर्मा बलबीर** (भोजपुरी के कवि ओर काव्य, पृ०) 143)

इहाँ 'बरवा' के बिना भंग कइले 'बरगद के गाछ' आ 'प्रियतम', दू गो अर्थ निकलत बा, एही से इहाँ अभंगश्लेष बा। 'पीपरवा' में 'पीपर के गाछ' आ 'दोसरा के पिया' ई दू अर्थ निकलत बा। इहाँ सभंगश्लेष बा। एगो उदाहरण इहाँ आउर दिहल जा रहल बा–

चढ़ी जे कमान त कमान घूम भाग चली

चारा ना चली कबो पइब ना चारा तू

बानन के चोट खाके बान मय छूट जाई

तारा से देख लेब, दुपहरिये तारा तू

उजड़ जाई नीर दूनू नयनन से नीर झड़ी

पारा के चढ़ते दरकब बनि पारा तू

बाजी अब लागल तब बाजी ना तोहार चली

कारा का होते समा जइब कारा तू

-गणेशदत्त किरण (किरण बावनी)

इहाँ कमान, चारा, बान, तारा, नीर, पारा, बाजी आ कारा जइसन शब्दन से अनेक अर्थ निकलला के कारण श्लेषालंकार होई।

वक्रोक्ति

अगर वक्ता के अन्यार्थक वाक्य के श्लेष चाहे काकु से श्रोता अलग अर्थ लगावे त वक्रोक्ति अलंकार होई। विश्वनाथ के परिभाषा बा-

''अन्यस्यान्यार्थक वाक्यम् अन्यथा योजयेद्यदि।

अन्यः श्लेषेषा काक्वा वा सा वक्रोक्तिस्ततोधद्विं।''

-साहित्य दर्पण (द०प०), पृ० 280

काकु के अर्थ होला कंठ से विशेष ढ़ंग से आवाज निकाल के बोलल।

उदाहरण- **राजसूय यज्ञ भैल, शिशुपाल बधि भैल**

अपने से धर्म के महान अब मनि हैं

-चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी)

इहाँ 'धर्म के दू अर्थ हो सकत बा, एक जवन धारण कइल जाय आ दोसर युधिष्ठिर।

आउर सबै रंग दाबत-दूबत

अंबर चीरि पीतंबर आइल

-चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी, पृ॰ 126)

इहाँ चीरहरण के समय चीर बढ़ावे के प्रसंग में ई पाँति आइल बाटे, जवना के अर्थ इहो बा कि आकाश मार्ग से श्रीकृष्ण अइलन। अम्बर के अर्थ कपड़ा आ आंकाश दुनों होला अउर पीतंबर के पीअर कपड़ा आ श्री कृष्ण दुनों अर्थ होला।

अर्थालंकार-

उपमा

विश्वनाथ उपमा के परिभाषा देले बाड़न-

''साम्यं वाच्यं वैधर्म्य वाक्यैक्य उपमा द्वयोः॥14॥

-साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 262

मतलब कि दू पदार्थ में भिन्नता के बावजूद समानता बतवला के 'उपमा' कहल जाला। अर्थालंकार के मूल आधार उपमा बाटे। उपमा के चार गो अंग होला उपमेय, उपमान, धर्म आ वाचक। 'उपमेय' ओकरा के कहल जाला जेकर बराबरी देखावल जाए, मतलब कि वर्णनीय विषयवस्तु आ प्रकृति। 'उपमान' ओकरा के कहल जाला जवना से कवनों वस्तु के मेल देखावल जाला। 'धर्म' ओह गुण आ विशेषता के कहल जाला जवन उपमेय आ उपमान दुनों में पावल जाला। 'मुँह चंदा अस चमकत बा' में चंदा आ मुँह के चमकल 'धर्म' बाटे। उपमेय आ उपमान के बराबरी देखावेवाला शब्द के 'वाचक' कहल जाला। जस, अस, जइसन, अइसन, ओइसन आदि एकर उदाहरण बाटे।

उपमा के मुख्य रूप से दू गो भेद होला-**'पूर्णोपमा'** आउर **'लुप्तोपमा'**। **पूर्णोपमा**

विश्वनाथ के अनुसार-**सा पूर्णा यदि सामान्य धर्म औपम्यवाचि च उपमेयं चोपमानं भवेद्वाव्यम्**। (इयंपुनः) ।। 12 ।।

मतलब कि, उपमा के चारों अंग के अगर शब्द के द्वारा कथन होखे त 'पूर्णोपमा' (पूरा उपमा) होई।

उदाहरण- **छुई मुई रानी सुकुआरि धान, पान अस,**

चान के निसान अस देहिया के कजरी।

-**चन्द्रशेखर मिश्र** (द्रौपदी पृ० 26)

इहाँ 'रानी' आ 'देह' उपमेय, 'धान-पान', आ 'चान' उपमान, 'अस' वाचक आ सुकुआरि आ साँवलापन (कजरी) 'धर्म' बाटे। एही से इहाँ पूर्णोपमा बाटे।

लुप्तोपमा- विश्वनाथ लिखले बाड़न-

"लुप्ता सामान्यधर्मादेरेकस्य यदि वाद्वयो॥17॥

-साहित्य दर्पण (द०प०), पृ० 265

मतलब कि, उपमेय, उपमान, धर्म आ वाचक में से एगो कवनो गायब होखे त लुप्तोपमा अलंकार होखी।

उदाहरण- **इहाँ के नारी विरताई**

दुर्गा काली के अवतार

-रामवचन शास्त्री 'अंजोर' (किरनमयी पृ० 6)

इहाँ 'भारतीय नारी' उपमेय, 'दुर्गा काली' उपनान आ 'वीरताई' धर्म बाटे। वाचक गायब बा। एही से इहाँ लुप्तोपमा अलंकार होई।

रूपक

विश्त्रनाथ रूपक के परिभाषा देत लिखले बाड़न-

"रूपकं रूपितारोपो विषये निरपह्वे"

-**साहित्य दर्पण** (द०प०), पृ० 303

जहाँ उपमेय में उपमान के आरोप करके दुनों के अभेद वर्णन कइल जाय, त उहाँ रूपक अलंकार होई। आरोप के मतलब इहाँ रूप दिहला से बा। जहाँ उपमेय के ही रूप दे दिहल जाय, उहाँ रूपक अलंकार होला। आरोप में समानतावाचक पद के कथन ना कइल जाय। उपमेय के उपमान के रूप दिहल जाय, तबहुओ उपमेय के साथ रहल जरूरी होला। रूपक में तीन गो बात जरूरी होला-

(क) उपमेय के उपमान के रूप दिहल

(ख) वाचक पद के अभाव

(ग) उपमेय के भी साथ-साथ कथन।

उदाहरण: 'मुखचान बा' कहला पर उपमेय 'मुख' के उपमान चाँद के रूप से दिआत बा। वाचक आ धर्म नइखे।

रूपक के तीन भेद होला-**साङ्ग रूपक, निरंग रूपक** आ **परम्परित रूपक।**

साङ्ग रूपक-विश्वनाथ के कहनाम बा-

"अङ्गिनो यदि साङ्गस्य रूपण सांगमेवतत ।।30।।

–साहित्य दर्पण (द०प०), पृ० 305

जहवाँ अंग सहित उपमेय में उपमान के आरोप कइल जाला, उहाँ साङ्गरूपक कहल जाई। एह में उपमेय के अंग सब में उपमान के अवयवन के आरोप कइल जाला।

उदाहरण– **कवनों रंगीन जवान भाव**
विचार के मउरी पेन्हले
शब्दन के डोली पर परिछात
लाल पीयर पगड़ी बन्हले
अछरन के बरियात
अंगुरियन के पोर के सहारे
कलम कँहरिया के कान्ह पर
कल्पना के गाँव में आ रहल बा।

–कुमार विमल

(भोजपुरी सम्मेलन, पत्रिका, मई 90, पृ० 156)

इहाँ 'कलम' उपमेय के कँहरिया उपमान के रूप दिआइल बा। कलम के काम बा तरह–तरह क अक्षरन के ढोअल (लिखल)। ओही तरह 'कँहरिया' के काम बरिआत ढोअल बाटे। इहाँ सब आरोप शब्द के द्वारा भइल बाटे। एही से इहाँ साङ्ग रूपक अलंकार के सृष्टि होत बा।

एगो दोसर उदाहरण देखल जा सकत बा–

भोर बयार सँगे उठि के छिछियात फिर भटके जियराई

-श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्री रामकथा, पृ॰ 146)

'जियरा' उपमेय खातिर 'भोर' बयार उपमान के आरोप साधर्म्य छिछिअइला आ भटकला के सँगे कइल गइल बा। वाचक नइखे। एह से इहाँ साङ्गरूपक अलंकार बा।

निरंग रूपक-विश्वनाथ के अनुसार निरंग रूपक के परिभाषा बा-

निरङ्ग केवलस्यैव रूपणं तदपि द्विधा ।। 31।।

-साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 306

अवयव से रहित उपमान के जहाँ उपमेय में आरोप कइल जाय, उहाँ निरंग रूपक अलंकार होई।

उदाहरण- **तिरिअइतिन तन रतन अटारी**

बाँकी चितवन नयन कटारी

-रघुनाथशरण शुक्ल कुबोध (के, पृ॰ 36)

इहाँ नयन कटारी में घायल करे के गुण के लेके रूपक बान्हल गइल बा। एह में अंग के वर्णन नइखे, एह से इहाँ रूपक अलंकार के सृष्टि होत बा।

परम्परित रूपक– विश्वनाथ के उक्ति बा–

"यत्र कस्यचिदारोपः परारोपण कारणम्। तत्परम्परित।"

साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 315

जहवाँ एगो आरोप दोसरा आरोप के कारण होखें, उहाँ परम्परित रूपक होई।

उदाहरण– **आशा बेलि बिरिछ लपिटावल**

आश बिरिछिया भूईं नियरावल

आशा सुमन आस वास मय

–**रघुनाथशरण शुक्ल 'कुबोध'** (के पृ॰ 36)

इहाँ एगो आशा (उपमेय) में उपमान फूल के आरोप अंगन के द्वारा भइल बा। जइसे, लतर, वृक्ष, फूल आ सुगन्ध के आरोप भइल बा। एही से इहाँ परम्परित रूपक बा।

दृष्टान्त

विद्यानाथ दृष्टान्त के परिभाषा अइसे देले वाड़न–

"द्वयोरर्थ योर्द्विरूपादानं विम्बप्रतिविम्बभावः।"

–**प्रतापरूद्रीय,** पृ॰ 311

जब पहिले कवनो बात कहि के ओकरा के समझावे खातिर दोसर बात कहल जाय आ जवन एके अइसन होखे, त दृष्टान्त अलंकार होई।

दृष्टान्त के मतलब उदाहरण भी ह। कवनो बात के कहके ओकर सच्चाई साबित करेला दोसर बात के कहल जाए त दृष्टान्त अलंकार होई।

उदाहरण- **राम कृपा अघ दूर हटै**

रवि से निशि के तम भागत लेखा।

-श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्री रामकथा, पृ॰ 56)

इहाँ पहिले कहल गइल बा कि राम के कृपा से पाप आ दुख दूर हटेला। फेर एह बात के समझावे खातिर ई कहल गइल बा कि जइसे सूर्य से रात के अन्हार भाग जाला, ओइसहीं राम कृपा से पाप भागेला। इहाँ पहिले कहल बात के सच्चाई साबित करे खातिर ओइसनके दोसर बात कहल गइल बा।

सन्देह

विश्नाथ के दिहल परिभाषा बा-

''सन्देहः प्रकृतेऽन्यस्य संशयः प्रतिभोत्थितः।

साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 35

जहवाँ कवनो वस्तु के सम्बन्ध में सादृशमूलक सन्देह होखे, उहवाँ सन्देह अलंकार होई। कि, का वगैरह शब्दन के द्वारा संदेह प्रकट कइल जाला। कतहीं एकरा बिना रहलहुँ काम चल जाला-

उदाहरण–खींचत सारी दुसासन हारी

आ बूड़न लागे समुन्दर सारी

देखि चिहाँ सँउसे दरबारी

कि सारी में नारी कि नारी में सारी

–रामवचन शास्त्री 'अँजोर' (निरधन के घनश्याम पृ॰ 51)

इहाँ सारी में नारी के आ नारी में सारी के स्थिति साफ–साफ नइखे बुझात, एही से सन्देह के सृष्टि होत बा।

भ्रांतिमान

भ्रांतिमान के बारे में विश्वनाथ के कथन बा–

''साम्यादतस्मिं स्तद्बुद्धिभ्रांन्ति प्रतिमोत्थितः॥36॥

साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 311

जहाँ भ्रम से कवनो वस्तु के कवनो आन वस्तु मान लिहल जाय, उहाँ भ्रांति चाहे भ्रम अलंकार होई।

उदाहरण– **ऊपर से हरि सारी बढ़ावेले**

ज्यों झरना झरलें बहुरंगा,

चीर मुड़ै मुड़ि के सिकुड़ै,

नभ बीच बने बड़ छोट तरंगा।

ई छवि देख के डाह के मारे

मसान से दौड़ल बा सिव नंगा।

संकर कौन नया झटकारत

रोकत बा लटकारी में गंगा?

चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी, पृ., 128)

इहॉं सारी में झरना के, चीर मुड़ के सिकुड़ला में लहर के आ एह से बनत स्थिति में गंगा के भ्रम पैदा होत बा, एही से इहाँ भ्रांतिमान अलंकार होई।

विभावना

विश्वनाथ के अनुसार विभावना के परिभाषा बा–

"विभावना बिना हेतु कार्योत्पत्तिर्य दुच्यते ॥66॥

साहित्य दर्पण (द०प०), पृ० 350

कारण के अभाव में कार्य का उत्पत्ति के वर्णन से विभावना अलंकार के सृष्टि होला। विभावना में कवि कवनों विशेष कारण के बिना कार्य का उत्पत्ति के वर्णन करेला।

असवद श्रवण, परस बिनु मूरत

निसदिन ध्यान पुरूख बिनु सूरत

निरस रसत, सौरभ बिनु सूँघत

जोगी जनम नशावल।

-रघुनाथशरण शुक्ल 'कुबोध' (के पृ॰ 67)

इहाँ बिना सबद के सुने के कार्य, बिना सूरत के देखें के कार्य, बिना सूरत के पुरूष के रोज ध्यान करे के कार्य, बिना रस के रस प्रवाह के कार्य आ बिना सुंघले सुगंध के कार्य के उत्पति भइला से-वर्णन भइला से इहाँ विभावना के उपस्थिति होत जात बा।

अतिशयोक्ति

विश्वनाथ अतिशयोक्ति अलंकार के परिभाषा देत लिखले बाड़न-

"सिद्धत्वेऽध्वसायस्याति शयोक्तिर्निगद्यते ॥46॥"

साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 323

उपमेय के छिपा के उपमान के साथ अभेद प्रतीति करावल अतिशयोक्ति अलंकार ह। अतिशयोक्ति के अर्थ ह बढ़ल-चढ़ल कथन। उपमेय के एकदम छिपा के उपमान से ओकर अभेद देखावल-उपमान से ओकर अभिन्नता देखावल अतिशयोक्ति के विषय ह। दू अलग-अलग वस्तु में अभिन्नता देखा के, अभिन्न वस्तु में भिन्नता देखा के, सम्बन्ध

रहला पर सम्बन्ध के अभाव बताके, सम्बन्ध के अभाव में सम्बन्ध बता के आ कहीं कार्य-कारण में सम्बन्ध गड़बड़ा के अतिशयोक्ति अलंकार के चमत्कार पैदा कइल जा सकेला।

उदाहरण- **मउरल पात कुसुम कुम्हिलाइल,**

मुरूदलि ललित लता लतराइल,

विरस विपिन बिनु गंध विधूनल,

कुसुम कलि मटियावल।

-रघुनाथशरण शुक्ल 'कुबोध' (के, पृ॰ 83)

इहाँ उपमेय जीवन गायब बा, उपमान-पात, कुसुम, लता वगैरह के झड़ी लाग गइल बा, जवन जीवन के साथ आपन अभिन्नता बता रहल बा।

बोध प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'अनुप्रास' अलंकार ह।

(क) अर्थालंकार (ख) शब्दालंकार

(ग) उभयालंकार (घ) रूपक

2. उपमेय के छिपा के उपमान के साथ अभेद महसूस करावल कहाला।

(क) अतिशयोक्ति (ख) लाटानुप्रास

(ग) रूपक (घ) उपमा

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अलंकार के बारे में बताईं।

2. अलंकार के कै गो प्रकार होला?

3. कवनों दू अलंकारन के उदाहरण सहित लक्षण बताईं।